नव भारत, भोपाल
'28 OCT 201[illegible]

सरकार लौटा दे महाकाल के 'बीते दिन'

क्रांति चतुर्वेदी

भोपाल, 27 अक्टूबर. मध्यप्रदेश सरकार उजैन के महाकाल क्षेत्र के वो 'बीते दिन' लौटाने का संकल्प और प्रयास कर सकती है, जिनके कारण भगवान शिव यहीं के होकर रह गये थे और भगवान श्रीकृष्ण ने यहां दो महत्वपूर्ण शिक्षायें ली थीं. इसमें चाहें तो उद्योगपति अनिल अम्बानी की भी मदद ली जा सकती है!

• हाल ही में संपन्न खजुराहो ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में अनिल अंबानी ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से कहा था कि वे महाकाल मंदिर क्षेत्र के लिये कुछ करना चाहते हैं. अंबानी अपने परिवार के साथ अक्सर महाकाल आते रहे हैं. वे नाथद्वारा भी इसी भाव से जाते रहते हैं.

आखिर महाकाल क्षेत्र के लिये क्या कर सकते हैं? इस प्रश्न के साथ एक पृष्ठभूमि प्रश्न यह भी है कि भगवान शिव- महाकाल रूप में उज्जैन ही क्यों बसे थे? पौराणिक और प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, पृथ्वी पर विचरण के दौरान यहां के घने जंगल को देखकर शिव रोमांचित हो गये थे. यहां के वृक्षों और लताओं ने उनसे यहीं रुकने का आग्रह किया. जंगल इतना घना था कि देवताओं को भी भगवान को खोज पाना कठिन रहता था. ■ शेष पृष्ठ 9 पर

क्या किया जा सकता है?

▪ पौराणिक नदी शिप्रा को उद्गम स्थल दोस्तदार मूंडला की शिप्रा टेकरी से लेकर संगम स्थल आलोट क्षेत्र तक वृक्षों की पट्टी से संरक्षित कर इसे सदा नीरा रखने की योजनायें. ▪ महाकाल के आसपास का क्षेत्र, नरवर, गुलाबखेड़ी, खजुरिया, मंसूर, टिकरिया, मुंजाखेड़ी, देवडूंगरी, झिरनिया, बपैया, बायन रुण्डा, महूखोरा जैसी अनेक पहाड़ियों पर वनों का संवर्धन. महिदपुर क्षेत्र के परंपरागत जल प्रबंधन तकनीक का संरक्षण. ▪ सप्त सागरों और कुंडों को पुराना वैभव लौटाना. ▪ इससे संभव है महाकाल वन की अवधारणा को पुनः बल मिले.

सरकार लौटा दे....

जंगल इतना घना था कि देवताओं को भी भगवान को खोज पाना कठिन रहता था. इसी जंगल से अभिभूत होकर शिव महाकाल रूप में यहीं के होकर रह गये. इसलिये स्कंद पुराण में शिप्रा के माहात्म्य के पहले महाकाल वन का माहात्म्य बताया गया है. श्रीमद भागवत पुराण के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण ने भी शिक्षा के लिये इसी नगरी को चुना और 64 कलाओं में से पर्यावरण की दो महत्वपूर्ण शिक्षा- जल प्रबंधन और वृक्ष संरक्षण सांदीपनी आश्रम में हासिल की थी.

दरअसल सदियों पहले से ही उज्जैन पूरी दुनिया में पर्यावरण प्रबंधन के लिये मशहूर था. प्राचीन ग्रंथों के मुताबिक यहां घने जंगल तो आबाद थे ही, साथ ही पवित्र शिप्रा के साथ नौ नदियां बहती थीं. सप्त सागर रहे हैं. चार सौ के लगभग कुंड रहे हैं. अनेक चौपड़े, बावड़ियां, कुण्डियां भी मौजूद थीं. कल्पना करिये उस शहर की 'जिसमें सदा नीरा नौ नदियां बहती हों. हर जगह उद्यान हो. सुरम्य वातावरण हो.

यह उज्जैन का जिंदा 'इको सिस्टम' ही था, जिसकी वजह से महाकाल और श्रीकृष्ण रीझ गये. वराहमिहीर ने जल- शिराओं और मेघ गर्भ का शास्त्र दिया और कालिदास ने तो मेघदूत में यक्ष के माध्यम से मेघ को कह दिया था कि रास्ते से थोड़ा हटकर जाना पड़ेगा, पर सुरम्य वातावरण से भरी इस नगरी में अवश्य रुकना. सरकार चाहे तो अनिल अंबानी को साथ लेकर महाकाल वन के पुराने वैभव को लौटाने पर केंद्रित होकर उज्जैन के समूचे 'इको सिस्टम' को पुनः जिंदा करने की दिशा में कुछ बड़ा कर सकती हैं. मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भी नदी संरक्षण की दिशा में प्रयत्नशील हैं.

पूरे उज्जैन जिले को केंद्र में रखकर योजनायें बनाई जा सकती हैं. इस संदर्भ में उज्जैन क्षेत्र की वर्तमान स्थिति है- शेष नदियां लुप्त हैं. अकेली शिप्रा अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है. घना महाकाल वन तो ठीक उज्जैन जिले में ही जंगल एक प्रतिशत बचे हैं. सप्त सागर दुर्दशा के शिकार हैं. कुंड, कुंडियां, बावड़ियां गायब हैं. हालात का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि परेशान उज्जैनवासी अब मेघों को रिझाने के लिये राग 'मेघ मल्हार' गाते हैं.